International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

वर्मा जी के शुद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों के उद्देश्य और उनका विवेचन

श्रीमती सन्तोष
हिन्दी विभाग
E-mail: suman14narwal@gmail.com

शोध आलेख सार– वर्मा जी शुद्ध ऐतिहासिक व सामाजिक उपन्यासों के कारण प्रसिद्ध रहे हैं। ऐतिहासिक उपन्यास का सम्बन्ध बीते हुए किसी काल की घटनाओं, चरित्रों और वातावरण से रहता है। ये सब तत्व समाज विशेष के अंग बनकर आते हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक उपन्यास सामाजिक उपन्यास की भाँति मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्धों और उनकी समस्याओं की कहानी है। उपन्यासकार इसमें वर्तमान समाज की समस्याओं को भी कलापूर्वक रखता है। किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास का इतिहास उसमें अपेक्षाकृत प्रधान रहता है। ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास के चौखटे में मानव की शाश्वत समस्याओं और क्रियाओं को ऐसे ढंग से संजोता है कि वे बीते युग की कहानी होकर भी 'आज' की चर्चा है। वह वर्तमान समस्याओं की नींव पर इतिहास की अद्भुत, श्रंगार, वीर, रौद्र, वीभत्स और करूण रस की चुभने वाली हृदयस्पर्शी कहानियों की दीवारें उठाता है और उन पर टिकाऊ कल्पना की छतें पाटकर सुन्दर भवन खड़ा कर देता है। ऐतिहासिक घटनाओं की प्रमाणिकता में पाठक को विश्वास होता है और यही वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य है।

मूलशब्द– उपन्यास, श्रंगार रस, वीभत्स रस, ऐतिहासिक, प्रचारवादिता।

भूमिका–

वर्मा जी के जीवन दर्शन से स्पष्ट है कि उनका संपूर्ण साहित्य सोद्देश्य है। किन्तु उनकी सोद्देश्यता का अर्थ प्रचारवादिता अथवा उपदेशात्मकता नहीं है। अतीत के प्रेरणादायक तत्वों और वर्तमान की यथार्थता के समन्वयन से एक नवीन जीवन–बोध देना ही उनके ऐतिहासिक उपन्यासों का उद्देश्य है। उनके आदर्श लोक में व्यक्ति, समाज और राष्ट्रोन्नयन की एक अविच्छिन्न भावधारा है, जो अतीत के प्रेरक तत्व में वर्तमान और भविष्य के लिए उद्बोधक बनी है। वर्मा जी ने लिखा है– ''उनको मैं पुराने वातावरण में ले जाकर पुरातन

और ग्राहय और अग्राहय दोनों मूर्तियाँ दिखाता हूँ, जिससे वे वर्तमान में लौटकर पुरातन के सड़ियलपन को वहीं छोड़ आऐ और सशक्त को अपने साथ रखकर वर्तमान की समस्या से भिड़ने में अपने आपको समर्थ पावें''[1]

स्पष्टतः वर्मा जी ने अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र अंकित किया है। उन्होंने इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा है–

> – ''केवल, रोटी, कपड़ा और मनोरंजन ही मानव के लिए पर्याप्त नहीं हैं, यह उसके लिए अनिवार्यतः पहली आवश्यकता जरूर, परन्तु उसे कुछ और भी चाहिए। यह कुछ और हमारा अतीत देगा।''[2]

– शुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास

- गढ़ कुंडार
- मुसाहिबजू
- झांसी की रानी लक्ष्मीबाई
- मृगनयनी
- अहिल्याबाई

वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों के परिशीलन क्रम में यथोपलब्ध विभिन्न उद्देश्यों और विवेचन तत्वों के आधार पर उनके समन्वित परिणाम निम्नलिखित स्वर हैं–

1. **ओजतत्व और पुरूषार्थ–** वर्मा जी के सभी उदात्त पात्र सत्कर्मों के लिए संघर्ष करते हैं। उनका ओजतत्व और पुरूषार्थ अत्याचारियों के दमन, दुःखी जनता के कष्टों को दूर करता है और मातृभूमि के रक्षार्थ है। उनके सभी पात्रों– राजा मानसिंह, देवसिंह, तात्यां टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, मुसाहिब दलीपसिंह इत्यादि में पर्याप्त ओजगुण और पुरूषार्थ हैं। ये सभी पात्र नानाविध संघर्ष लेते हुए अपने शत्रुओं का दमन करते हैं। वे अपने पुरूषार्थ प्रदर्शन में अनावश्यक रूप से शत्रुता मोल नहीं लेते। जब वह देखते हैं कि शत्रु धर्म व नीति की बातें नहीं समझता है और उनके स्वत्व को नष्ट करने की कोशिश करता है तो वह ओजतत्व व पुरूषार्थ का सहारा लेकर उनका विरोध करते हैं। किन्तु ऐसे पुरूषार्थी चरित्र

अपने मानवीय गुणों का त्याग नहीं करते हैं। वे अपने आदर्शों पर चलते हुए अत्याचारियों का दमन करते हैं।

—''अब पारस्परिक युद्धों और आत्मरक्षणा तक ही उनका पुरूषार्थ सीमित है।''[3]

2. **कला और कर्त्तव्य का समन्वय—** वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में जैसा मणिकांचन संयोग इतिहास तत्व और औपन्यासिक कल्पना का है, वैसा ही कर्म और भावना का भी है। वर्मा ने पात्रों के चरित्र—चित्रण, घटनाओं की योजना और उनकी परिणति, पात्रों की उक्तियों तथा उपन्यास के अन्तिम शब्दों, ''कला और कर्त्तव्य का समन्वय इस कसर को किसी दिन अवश्य पूरा करेगा।''[4] सभी के द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि वह कला जो कर्त्तव्य को लंगड़ा कर दे और वह कर्त्तव्य जो कला को अंग—भंग कर दे महान नहीं हो सकता। कला का धर्म है कि वह कर्त्तव्य को सजग किये रहे, भावना विवेक को सम्बल प्रदान करती रहे, जीवन की सफलता के लिए मनोबल और धारणा दोनों आवश्यक हैं। मृगनयनी 'कला' और कर्त्तव्य का जो प्रतीकात्मक चित्र बनाती है, उसमें भावना और कर्म हृदय और बुद्धि का ही सामंजस्य है।

— 'झांसी की रानी—लक्ष्मीबाई' में गीता के कर्मवाद की विशेष चर्चा हुई है।[5]

3. **प्रगतिशील धर्माचरण—** वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में धर्म और नैतिकता का प्रगतिशील रूप प्रस्तुत है। इस प्रकार वे दो प्रकार की स्थितियों का निर्माण करते हैं। एक ओर कठोर रूढिवाद तो दूसरी ओर प्रगतिशील विचार मृगनयनी उपन्यास में ''बोधन रूढिवादी, संकीर्ण, कट्टर और हृदयहीन है। सड़ी—गली सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं के प्रति उसकी घोर आस्था है।''[6]

बोधन के विचार ''मेरा धर्म किसी धर्म से कम है जो में अपने को छोड़कर दूसरे का पल्ला पकडूं.....अपना धर्म नहीं छोडूंग। सिर काट कर फेंक दो, क्योंकि वह मेरा नहीं।''

धर्म और नैतिकता के सम्बन्ध में वर्मा जी का व्यापक दृष्टिकोण मृगनयनी के अतिरिक्त अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई, गढकुडार इत्यादि में व्यक्त है। वर्मा जी के सभी पात्र आचरण को

धर्म नीति के अनुसार रखना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, मोतीबाई, माधव जी सिंधियां इत्यादि अनेकानेक पात्रों ने नैतिक मर्यादाओं का पालन किया है।

4. **ऊँच–नीच की समस्या–** वर्मा जी का विश्वास है कि वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था श्रम विभाजन के आधार पर की गई थी। लेकिन लोग जाति के आधार पर लड़ने लगे। 'गढ़कुंडार' में खंगारों और बुंदेलों का संघर्ष जात्याभिमान का परिणाम बुंदेलों में जातीय गौरव, उच्चता, साहस, वीरता, मानापमान की भावना बड़ी प्रबल है।

– ''वे खंगारों को अपने से निम्न समझते है, न तो उसके हाथ का छुआ अन्न–जल ग्रहण करते हैं और न उसके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित करते हैं।''[7]

इसी प्रकार झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास में भी ऊँच–नीच दिखाई देती है। ''शूद्रों के जनेऊ धारण के अधिकार को लेकर राजा गंगाधर राव के उच्च वर्ण को ठेस लगती है और वे गरम तांबे के तारों का जनेऊ पहनाने का आदेश देते हैं।''[8] लेकिन दूरी ओर रानी लक्ष्मीबाई, रानी अहिल्याबाई, माधव जी सिंधिया इत्यादि उच्चवर्गीय स्त्री–पुरूष पात्र निम्न वर्ग के पात्रों के प्रति यथेष्ट सहानुभूति रखते हैं। वस्तुतः वर्मा जी सांप्रदायिकता का प्रचार नहीं करते, बल्कि वह इस ऊँच–नीच को समाप्त करना चाहते हैं।

5. **मानवता के प्रति साहनुभूति–** वर्मा जी के साहित्य में मानवता ही मूल स्वर है। सामंती समाज–व्यवस्था की सारी बुराईयों पर प्रहार करते हुए उन्होंने जन–जीवन के प्रति सहानुभूति, संवेदना और करूणभाव व्यक्त किया है। राजा मानसिंह, अहिल्याबाई, दुर्गावती, मोतीबाई इत्यादि नारी पात्रों में की। मानव–धर्म के प्रति अटूट आस्था है। मानवीय संवेदना और सहानुभूति पाकर उनके दुश्चरित्र पात्र भी सच्चरित्र पात्र बन जाते हैं।

– भक्त ने कहा ''और कुछ नहीं, चरणों का आश्रय।'' और पैरों पर गिरने को हुआ कि देवी ने थाम लिया, और अपने गले की पुष्प माला दिवाकर के सिर पर बांध दी। माला टूटकर गले में आ गई, देवी सिंहासन समेत कहीं उड़ी जा रही है और वह साथ है। अनन्त स्थान और अनन्त समय।''[9]

6. **प्रेम भावना–** वर्मा जी प्रेम को जीवन का आवश्यक अंग मानते हैं। उनकी प्रेम भावना वासना से मुक्त है। उसमें एक आत्मीय गुण है। जहां स्वार्थ से वशीभूत प्रेमी है, वहां

अलगाव का भाव रहता है। झांसी की रानी–लक्ष्मीबाई उपन्यास में चार प्रेम कथाओं को दिखाया गया है। मोतीबाई और खुदाबख्श की प्रणय कथा, तांत्या टोपे और जूही, सुन्दर और रघुनाथ सिंह, नारायण शास्त्री और छोटी भंगिन की प्रणय कथा को दिखाया है। गढ कुढार में तारा और दिवाकर का प्रेम भी आलौकिक है। ''उसमें प्राणोत्सर्ग की भावना है। अतः एक दिन तारा को जब साँप कटता है, अपने प्राणों पर उसके घाव के विष को मुँह से चूसता है।''[10]

इसी प्रकार मृगनयनी में अटल और लाखी के प्रेम को दिखाया गया है। वह अनाथ लाखी को अपने घर में आश्रय देता है, अपना अन्न खिलाता है, उसे उदास देखकर अधीर हो उठता है और प्रतिज्ञा करता है – ''चाहे संसार इधर का उधर हो जाए, चाहे मेरी बोटी–बोटी हो जाए, तुमको कभी कष्ट नहीं होने दूंगा।''[11]

7. **राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश प्रेम–** वर्मा जी की राष्ट्रीय भावना उनके प्रत्येक ऐतिहासिक उपन्यास में दिखाई देती है। रानी लक्ष्मीबाई के हृदय में बचपन से ही स्वराज्य के लिए एक ज्वाला सुलगती चली आ रही थी। उसी के लिए लड़कर मरकर वह उसकी नींव का पत्थर बनीं।[12]

– ''जब किसी विशेष भूभाग के मनुष्य वहां के प्राकृतिक वातावरण, रीति–नीति, विचार–विश्वास, और प्रवृतियों की एकता और दीर्घ व्यापारशीलता के कारण उस प्राकृतिक वातावरण, वहां के निवासियों और मान्य आचारों के प्रति मोह, सहानुभूति और एकात्म्य का अनुभव करते हैं तो इस अनुभूति को राष्ट्रीयता कहा जाता है।''[13]

8. **आदर्शोन्मुख यथार्थवाद–** ऐतिहासिक उपन्यास प्रायः आदर्शवादी होते हैं, किन्तु कोरा आदर्श ही उसका चरम लक्ष्य नहीं है। यथार्थ के अभाव में वह नितांत अव्यवहारिक और काल्पनिक सिद्ध होगा। यथार्थ की अनुभूति से ही आदर्श की कल्पना सार्थक होती है। वर्मा जी आदर्श और यथार्थ के पारंपरिक विनियोग से ऐतिहासिक उपन्यासों का सृजन करते हैं।[14]

जीवन में 'जो है और जो होना चाहिए', इन्हें हम क्रमशः यथार्थ और आदर्श की संज्ञा देते हैं, परन्तु 'जो होना चाहिए' या जो कथित आदर्शवाद है, उसके पैर भी यथार्थ की भूमि पर टिके हैं। यदि उसमें जीवन का यथार्थ या उसकी वास्तविकता का अंश न होता तो हम उसे पाने के लिए पीछे क्यों दौड़ते। अतः कल्पना का रंग चढाए बिना जीवन

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

का यथातथ्य चित्रण यथार्थवाद है और कल्पना के स्पर्श से उसका साफ सुथरा स्वरूप है आदर्शवाद।

इनके उपन्यासों में आदर्श और यथार्थ का समन्वयन है। घटनाओं की यथार्थता से चरित्रों में वैचारिक आदर्श आरोपित कर वे अपनी कृतियों को सत्यं–शिवं–सुन्दरम् से विभूषित करते है। वर्मा जी के प्रायः सभी सशक्त पात्र आदर्शवादी है। 'गढकुंडार' में जात्याभिमान के कारण वैमनस्य आदि संकीर्ण मनोवृत्तियों के चित्रण में लेखक का आदर्श ही निहित है। इसी प्रकार कथा और चरित्र की दृष्टि से 'मृगनयनी' भी एक आदर्शवादी उपन्यास है।[15]

निष्कर्ष– वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में उपर्युक्त प्रत्यक्षतः व्यक्त उद्देश्यों और विचारों के अतिरिक्त उनकी संभावनाऐं भी निहित है। वर्मा के उपन्यासों का उद्देश्य है राष्ट्र का निर्माण करना। मनुष्यों के चरित्र का निर्माण करना। जाति–पाति के भेद भाव को समाप्त करना। जाति–पाति के भेदभावको समाप्त करना। प्रेम भावना उत्पन्न करना। मानव को यथार्थवाद से अवगत करना आदि उनके उपन्यासों का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना उनके उपन्यासों का उद्देश्य है।

सन्दर्भ–

1. डॉक्टर शशिभूषण सिंहल– हिन्दी उपन्यास की प्रकृतियां, पृ0 237.
2. वही, पृ0 232.
3. डॉ0 शशिभूषण सिंहल –उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, पृ0 144.
4. हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास और मृगनयनी– डॉ0 शान्ति स्वरूप गुप्त, पृ0 134.
5. झाँसी की रानी–लक्ष्मीबाई, पृ0 418.
6. वृन्दावनलाल वर्मा का उपन्यास और कला– शिवकुमार मिश्र, पृ0 76.
7. वृन्दावनलाल वर्मा का उपन्यास – साहित्य – डॉ0 मोहिनी सहाय, पृ0 462.
8. झाँसी की रानी–लक्ष्मीबाई, पृ0 48–49.
9. गढ़ कुडार, पृ0 456.
10 गढ़ कुडार, पृ0 243.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

11. मृगनयनी, पृ0 63.
12. झाँसी की रानी–लक्ष्मीबाई, पृ0 510.
13. डॉ0 वासुदेव नंदन प्रसाद एवं प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद– साहित्य का विश्लेषण, पृ0 302.
14. अपनी कहानी, पृ0 209.
15. डॉ. सर्वजीत राय– हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदर्श, पृ0 153.